Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Volume-1, Issue-3 (July-September 2025), pp.173-182, ISSN: 3107-5088
www.cognitivethinking.in
https://doi.org/10.5281/zenodo.17313466.

मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतुष्टि एवं कार्यतनाव का एक तुलनात्मक अध्ययन

1. निवेदिता कुमारी, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
2. डॉ. आस्फाक अहमद, (शोध पर्यवेक्षक) सहायक प्राध्यापक, शिक्षा शास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोधगया बिहार

सारांश:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मगध क्षेत्र (बिहार) में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों (B.Ed., D.El.Ed. कॉलेजों) में कार्यरत प्रशिक्षकों के कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर की एक तुलनात्मक है। इनके अंदर चलने वाली कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव जैसी भावनात्मक मनोदशा जांच एवं परीक्षण किया गया है। इसके लिए मानकीकृत प्रश्नावली को प्रयोग में लाया गया है। क्यों कि शिक्षण की गुणवत्ता पर शिक्षकों की मनोदशा के गहरे प्रभाव को देखा गया है।

अध्ययन का उद्देश्य स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के बीच कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर कों ज्ञात करना है। अध्ययन से यदि कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है, तो उसका कारण पता लगाना और उन कारकों की पहचान करना है। इनके अंतरों के लिए उत्तरदायी कौन है तथा इससे निजात किस प्रकार पाया जा सकता हैं।

प्रस्तुत अनुसंधान में विभिन्न सांख्यिकीय विधि के साथ तुलनात्मक, सहसंबंधात्मक एवं वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया। दो स्वतंत्र समूहों, स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा छः सौ, शिक्षकों का नमूना के रूप में लिया गया है। डेटा संग्रह के लिए 'कार्यसंतुष्टि मापन हेतु 'डॉ आर एस मिश्रा' और 'मनोरमा तिवारी' द्वारा निर्मित व प्रमाणीकृत और 'कार्य तनाव प्रश्नावली 'मसूद अंसारी' और 'डॉ. शाह मो. खान' द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरणों का प्रदत संग्रहण हेतु प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों की परीक्षण विश्लेषण स्वतंत्र नमूना का t-मूल्य तथा 'r' सहसंबंध जैस सांख्यिकीय विधियों द्वारा गणना किया गया है। परिणामों से यह स्पष्ट होता

हैं, कि स्ववितपोषित संस्थानों के शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का स्तर निम्न तथा कार्यतनाव का स्तर उच्च पाया जाता है, जबकि वित्तपोषित संस्थानों के शिक्षकों में इसके विपरीत कार्यसंतुष्टि का स्तर उच्च एवं कार्यतनाव के स्तर निम्न होने की प्रवृत्ति देखी गई। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मगध क्षेत्र में स्थित प्रशिक्षण संस्थानों के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषण स्वरूपय माड्यूल वहां पर कार्यरत शिक्षकों की मनोदशा को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता रहता है। जिसके कारण शिक्षण प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं नीति निर्माण की प्रक्रिया भी गंभीर रुप से प्रभावित होता रहता हैं।

मुख्य शब्द: प्रशिक्षक, कार्यसंतुष्टि, कार्यतनाव, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, स्ववित्तपोषित संस्थान, वित्तपोषित, मगध क्षेत्र, तुलनात्मक, आदि।

परिचय:

प्रस्तुत शोध मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्त-पोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि एवं कार्य तनाव जैसे मानसिक अवस्था पर किया गया है। समाज की प्रगति की आधारशिला शिक्षा है, तथा शिक्षक इस शिला के निर्माणकर्ता है और उन भावी शिक्षकों के निर्माणकर्ता प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत प्रशिक्षक होते हैं।, इसलिए इन प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक, आर्थिक व व्यावसायिक कल्याण का अध्ययन किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। "शिक्षा प्रशिक्षक वह विशेषज्ञ व्यक्ति है जो शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए कार्यक्रमों का आयोजन, निर्देशन एवं मूल्यांकन करता है। उसका मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षण क्षमता, पाठ्यक्रम की समझ और कक्षा प्रबंधन कौशल को सुदृढ़ करना होता है, ताकि विद्यार्थियों के अधिगम के परिणामों में सुधार लाया जा सके।"[1]

प्रशिक्षक: एनसीटीई (2009-2014) के अनुसार - "प्रशिक्षक वह व्यक्ति होता है जो किसी विशेष क्षेत्र में ज्ञान, कौशल और अनुभव प्रदान करता है। प्रशिक्षक का मुख्य उद्देश्य छात्रों या प्रशिक्षुओं को उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद करना होता है।"

शिक्षक प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है। एक प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल शिक्षक के व्यक्तित्व का विकास करता है बल्कि उसे एक सक्षम मार्गदर्शक बनाता है, जो देश के भविष्य यानी बच्चों को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, एक मजबूत शिक्षा व्यवस्था के लिए मजबूत शिक्षक प्रशिक्षण अनिवार्य है

वर्तमान में स्ववित्तपोषित, तथा वित्तपोषित, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुतायत कमियाँ हैं। पेपर के अनुसार ये प्रशिक्षण सैद्धांतिक होते हैं और व्यावहारिक चुनौतियों से दूर रहते हैं। इन्हें और अधिक प्रायोगिक, निरंतर और मूल्यांकन-केंद्रित बनाने की आवश्यकता है। समय-समय पर सेवाकालीन प्रशिक्षण भी आवश्यक है ताकि शिक्षक नवीनतम शैक्षणिक तकनीकों से अपडेट रह सकें।

कार्य संतुष्टि : कार्यसंतुष्टि से तात्पर्य किसी व्यक्ति की अपने कार्य या कार्यानुभवों के प्रकार्यों के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया से है। यह एक ऐसी मनोदशा है जो तब उत्पन्न होती है जब कोई व्यक्ति अपने

कार्य को अपने मूल्यों के अनुरूप पाता है तथा संगठनात्मक वातावरण में उसकी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।"[2]

कार्यतनाव : "कार्यतनाव एक हानिकारक भौतिक एवं भावनात्मक प्रतिक्रिया है जो तब उत्पन्न होती है जब कार्य की माँगें, व्यक्ति की क्षमताओं, संसाधनों या आवश्यकताओं के साथ मेल नहीं खातीं। यह एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो अक्सर कार्यस्थल के दबाव, अत्यधिक कार्यभार, भूमिका की अस्पष्टता, या संगठनात्मक संरचना के कारण उत्पन्न होती है।"[3]

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान:

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान एक ऐसा कार्यक्रम है जिसके द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों के लिए शिक्षक तैयार करतीं है। विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करने योग्य शिक्षकों को चरणबद्ध तरीके से उच्च-गुणवत्ता वाले, प्रतिबद्ध और योग्य व्यावसायिक शिक्षकों को प्रशिक्षित करते रहती है।

> "शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान वे विशेष शैक्षणिक संस्थान हैं जो व्यक्तियों को शिक्षण के पेशे के लिए तैयार करते और प्रशिक्षित करते हैं। इनका उद्देश्य भावी शिक्षकों में आवश्यक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करना है ताकि वे कक्षा में और समग्र रूप से शैक्षिक प्रणाली में प्रभावी ढंग से कार्य कर सकें। ये संस्थान शिक्षण को एक पेशे के रूप में स्थापित करने का आधार तैयार करते हैं।"[4]

स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थान:

"स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान वे निजी शिक्षण संस्थान हैं जो सरकारी अनुदान या वित्तीय सहायता पर निर्भर न होकर, मुख्य रूप से छात्रों से ली जाने वाली शुल्क (फीस) और अन्य स्व-सृजित संसाधनों के माध्यम से अपना वित्तीय संचालन करते हैं। इनका प्रबंधन और स्वामित्व निजी ट्रस्टों, सोसाइटियों या कंपनियों के पास होता है। इन्हें संचालन की अनुमति के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) जैसे नियामक निकायों से मान्यता प्राप्त होती है।"[5]

स्ववित्तपोषित संस्थानों के उपर यूनेस्को की रिपोर्ट में भारत के स्ववित्तपोषित संस्थानों पर संदेह व्यक्त करते हुए कहा है कि तेजी से विस्तार किया जा रहा है । साथ ही इस बात पर जोर दिया गया है कि मजबूत गुणवत्तापूर्ण साशन तंत्र की आवश्यकता है ताकि लाभ के उद्देश्य से संस्थान संचालक शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता से समझौता न करें।

वितपोषित प्रशिक्षण संस्थान :

"वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान से तात्पर्य ऐसे शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेजों या संस्थानों से है जिनका वित्तपोषण मुख्य रूप से सरकार (केंद्र या राज्य) द्वारा किया जाता है। ये संस्थान सरकारी कोष से प्राप्त अनुदान पर संचालित होते हैं और इनकी फीस संरचना आमतौर पर स्ववित्तपोषित संस्थानों की

तुलना में काफी कम होती है। इनका उद्देश्य सार्वजनिक हित में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार करना है, न कि लाभ कमाना।"[6]

वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के उपर ध्यान केंद्रित करते हुए 'यूनेस्को' जैसे विश्वस्तरीय संस्था द्वारा इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि चंसार्वजनिक रूप से वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान शिक्षक तैयारी में समानता और न्याय सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। क्योंकि इस प्रकार के प्रशिक्षण संस्थानों में कम आय वाले छात्रों को इस पेशे में आने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता हैं।

पृष्ठभूमि:

मगध प्राचीन भारत के सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली महाजनपदों राज्यों में से एक था। इसका उल्लेख महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत तथा बौद्ध और जैन ग्रंथों में भी मिलता है। यह एक ऐतिहासिक सभ्यता और साम्राज्य जो काबूल कंधार तक फैला हुआ था। परन्तु वर्तमान में बिहार प्रदेश का एक प्रमंडल है। शोधार्थी का वर्तमान में मगध प्रमंडल क्षेत्र के अंतर्गत पांच जिलों को इसमें शामिल किया गया ह।, गयाजी, औरंगाबाद , नवादा, जहानाबाद और अरवल आता है। । इसी क्षेत्र की पहचान और गौरव को बढ़ाने वाले हिंदूओं धर्मालंबियों के पवित्र मोक्ष-धाम-गयाजीकी विष्णु चरण मंदिर, बौद्ध धर्मावलंबिओं के लिए भगवान बुद्ध का ज्ञानस्थली भूमि- बोधगया जैसे पुरातन नगर स्थित है। सरल शब्दों में कहें तो, मगध क्षेत्र आधुनिक बिहार का हृदय स्थल है, जो अपने गौरवशाली अतीत, अमूल्य धरोहर और जीवंत बनाए रखने में सफल नगर है।

वर्तमान काल में बिहार के मगध क्षेत्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत वर्ष में शिक्षा व्यवस्था के दो स्वरूप वाले स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित संस्थानों का संचालन किया जा रहा है । इसी प्रकार की व्यवस्था बी.एड. एवं डी.एल.एड. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में भी किया जा रहा है। इन दोनों प्रकार के संस्थानों के कार्य, संस्थान के परिवेश, संस्थान के सेवा शर्तें, शिक्षकों के सेवा काल, शिक्षकों पर कार्यभार, पारिश्रमिक एवं प्रशासनिक ढाँचे एवं संचालन में मूलभूत अंतर होते हैं। ये अंतर शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव जैसे, मानसिक अवस्था के स्तर को प्रभावित करते रहती हैं।

शोध समस्या: कैरिंगटन के अनुसार, "एक शोध समस्या एक ऐसा प्रश्न है जिसे एक शोधकर्ता अपने अध्ययन के माध्यम से हल करना चाहता है। यह वह मुद्दा है जिस पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसका समाधान ज्ञान के भंडार में योगदान देगा।"[7]

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोध समस्या वह स्पष्ट, शोध-योग्य, महत्वपूर्ण और प्रासंगिक होती है। यह ज्ञान के मौजूदा भंडार में एक अंतर या कमी की ओर इशारा करती है और एक व्यवस्थित जांच की मांग करती है। उपरोक्त सभी संदर्भ इस बात पर एकमत हैं कि शोध समस्या किसी भी शोध का केंद्रीय आधारस्तंभ है।

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या मगध क्षेत्र बिहार राज्य के दक्षिण क्षेत्र में स्थित जिला, गयाजी, जहानाबाद, नवादा, अरवल, और औरंगाबाद है। जो शिक्षा के क्षेत्र में एक संवेदनशील क्षेत्र रहा है। इस क्षेत्र में यह देखने की आवश्यकता है कि क्या संस्थान के स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषण के स्रोत के आधार पर शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य जैसे- कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर में कोई अंतर है। इस शोध समस्या के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से संस्थानों के प्रबंधन, प्रबंधक, संचालनकर्ता, शिक्षा नीति निर्माताओं एवं समग्र शिक्षा प्रणाली के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हों सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:

शोध अध्ययन के उद्देश्य किसी शोध अध्ययन का वह स्पष्ट, संक्षिप्त और सटीक लक्ष्य होता है जो यह स्पष्ट करता है कि शोधकर्ता अपने अध्ययन के माध्यम से क्या हासिल करना चाहता है। यह शोध प्रश्न से थोड़ा अलग होता है। उद्देश्य, प्रश्नो का जवाब देने हेतु बनाई गई क्रियान्वयन की योजना की रूपरेखा होती है।

- मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यतनाव के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतना१व के बीच संबंध की जाँच करना।
- मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।

शून्य परिकल्पना:

मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- परिकल्पना: मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- परिकल्पना: स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि कार्यतनाव के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- वैकल्पिक परिकल्पना: मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- वैकल्पिक परिकल्पना: मगध क्षेत्र में स्थित वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमन:

प्रस्तुत शोध अध्ययन मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव पर एक तुलनात्मक अध्ययन है।

I. प्रस्तुत शोध अध्ययन मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों पर केंद्रित है।
II. प्रस्तुत शोध अध्ययन स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि जैसे आंतरिक संवेगों की स्थिति पर केंद्रित है।
III. प्रस्तुत शोध अध्ययन स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित शिक्षकों की कार्यतनाव जैसे आंतरिक संवेगों की स्थिति पर केंद्रित है।
IV. यह अध्ययन एक निश्चित समय सीमा मई 2025 तक पूरा किया जाएगा।
V. यह शोध अध्ययन मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित कुल 55 बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकोंपर केंद्रित है।
VI. यह शोध अध्ययन एक निश्चित संख्या 500 शिक्षकों पर केंद्रित है।
VII. प्रस्तुत अध्ययन एक तुलनात्मक अध्ययन है, जिसमें स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि और कार्यतनाव की तुलना की जाएगी।

साहित्य समीक्षा: प्रस्तुत शोध अध्याय में शोधकर्ता कार्यसंतुष्टि, कार्यतनाव तथा शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित पूर्व में हुए अध्ययनों की समीक्षा किया गया है। जिसे उप-शीर्षकों में विभाजित किया गया है:

- कार्यसंतुष्टि से संबंधित अध्ययन: विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों, विशेषकर प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव से जुड़े सिद्धांतों एवं अनुसंधानों के निष्कर्षों की अध्ययन व चर्चा किया गया है।
- कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव से संबंधित तनाव के स्रोतों, प्रभावों का अध्ययन एवं निराकरण के उपायों ध्यान केंद्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है ।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों पर ध्यान केंद्रित कर अध्ययन किया गया है विशेष रूप से बी.एड. डी.एल.एड. जैसे संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की दशा पर यहां अध्ययन की समीक्षा है।
- स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित संस्थानों कार्यरत प्रशिक्षकों एवं शिक्षकों कार्य संतुष्टि त एवं कार्यतनाव पर तुलनात्मक किए गई अध्ययन पर शोधकार्यों किया गया है।

शोध अध्ययन की समीक्षा: उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्त-पोषित तथा वित्तपोषित संस्थानों संबंधित कोई शोध नहीं हुआ है । अतः: इस थे क्षेत्र प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के बीच व्याप्त समस्या पर अध्ययन आवश्यकता है।

शोध समस्या:

"शोध पद्धति एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका उपयोग समस्याओं का समाधान करने और नए ज्ञान की खोज करने के लिए किया जाता है। इसमें डेटा संग्रह, विश्लेषण, और निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया शामिल होती है।"[7]

प्रस्तुत शोध अध्ययन मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि तथा कार्यतनाव का एक तुलनात्मक अध्ययन विषय पर किया गया है। इसके अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण, सहसंबंधात्मक,शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श: जनसंख्या - प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र बिहार राज्य के मगध प्रमंडल आता है। इस क्षेत्र के अंतर्गत पांच जिलों जिला, गयाजी, नवादा, अरवल, जहानाबाद, औरंगाबाद सामील किया गया हैं। इस क्षेत्र में संचालित बी.एड. और डी.एल.एड. संस्थानों की कुल संख्या 55 हैं। इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की संख्या लगभग 1572 है ।

न्यादर्श : प्रस्तुत शोध में सर्वप्रथम संस्थानों को स्वरुप, संरचना एवं संचालन के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। जिसको दो समूह स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित में विभाजित गया है। तत्पश्चात प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक रूप से वहां कार्यरत शिक्षकों का पुरुष व महिला समूह-वार चयन किया गया है।

इस शोध अध्ययन के लिए सत्रह स्ववित्तपोषित और आठ वित्तपोषित संस्थानों को चयनित किया गया है। इन संस्थानों मे कार्यरत स्ववित्तपोषित पुरुष संख्या=372, महिलाओं की संख्या=108 तथा वित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत पुरुषों की संख्या= 80 महिलाओं की संख्या= 40 कुल योग= 600 हैं। इन शिक्षकों को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयनित किया गया है ।

डेटा संग्रह के उपकरण : प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु "डॉ. आर. एस.मिश्रा और मनोरमा तिवारी" द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत कार्यसंतुष्टि प्रश्नावली तथा "डॉ.शाह महमूद और मसूद अंसारी" द्वारा निर्मित कार्यतनाव प्रश्नावली प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संग्रहण: प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता स्वयं संस्थानों का भ्रमण करके शिक्षकों से अनुमति लेकर प्रश्नावलियाँ वितरित कर उसे एकत्रित की, ताकि प्रतिक्रिया दर सही रखा गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण : एकत्रित आंकड़ों का गणना , परीक्षण एवं विश्लेषण संगणक के तकनीकों द्वारा इंटरनेट, सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया है।

वर्णनात्मक सांख्यिकी : माध्य , मध्य मान,मानक विचलन टी-मूल्य और सार्थकता स्तर मान आदि की गणना एवं परीक्षण किया गया है।

अनुमानात्मक सांख्यिकी : स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण दोनों समूहों के बीच अंतर जाँचने के लिए। पियर्सन सहसंबंध गुणांक, कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए किया गया है।

परिणाम एवं विश्लेषण: परिकल्पना के अनुरूप विभिन्न समूहों के प्राप्त आंकड़ों को सारणियों एवं ग्राफ़ों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, तथा सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणामों की व्याख्या की गई है। जिसमें मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत

विभिन्न समूहों के शिक्षकों के संख्या,जो स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित संस्थानों के स्वरूप तथा लैंगिक आधार पर वर्गीकृत किया गया है। उनके कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के आंकड़ों के माध्यमान , माध्य,मानक विचलन, और टी-मूल्य से संबंधी परीक्षण परिणामों के विश्लेषण को तालिका में तथा ग्राफिक चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

जेमगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के स्वरूपों, पुरुषों एवं महिलाओं के समूहों के आधार पर उनके संख्या कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के आंकड़ों के माध्य, मध्यमान, मानक विचलन, टी-मूल्य के परिणामों और सार्थकता स्तर मान को दर्शाता तालिका ।

तालिका संख्या-1

कार्यसंतुष्टि संबंधित आंकड़ों के परीक्षण परिणाम

क्र. सं.	N1स्व वित पोषित	N2 वित्तपोषित	M1 माध्य	σ1 मानक विचलन	M2 माध्य	σ2 मानक विचलन	t टी-मूल्य	0.5%सार्थकता मान 1.96	परिणाम /निर्वचन
H.0.1	452	148	90.54	23.51	84.61	26.29	2.62	t(598)=2.807	अस्वीकृत
H.0.2	372	108	78.98	17.49	84.61	26.29	-2.22	t(478)=2.810	स्वीकृत
H.0.3	80	40	124.5	9.07	127.35	7.27	-1.78	t(118)=2.959	स्वीकृत
H.0.4	372	80	78.98	17.49	124.5	9.07	-24.89	t(450)=2.812	अस्वीकृत
H.0.5	108	40	84.61	26.29	127.35	7.27	-12.72	t(146)=2.943	अस्वीकृत

तालिका संख्या-2

कार्यतनाव संबंधी आंकड़ों के परीक्षण परिणाम

क्र. सं.	N1 स्व.शि.की सं.	N2 वित पोषित	M1r-z स्कोर माध्य	σ1 r-z स्कोर मानक विचलन	M2 r-z स्कोर माध्य,	σ2 r-z स्कोर	t	0.5% सार्थकता मान। 1.96	परिणाम निर्वाचन
H.0.1	452	148	52.385681 0.868973	10.891151 0.765037	49.763514 0.533516	10.89111 0.76503	2.5422	2.8175	अस्वीकृत
H.0.2	372	108	55.22043 1.010845	7.29064 0.546867	55.194444 0.729652	7.20910 0.80925	0.0329	2.8201	स्वीकृत
H.0.3	80	40	35.1375 0.00695	1.620625 0.131545	55.194444 0.729652	7.20910 0.80925	-17.3778	2.8608	अस्वीकृत
H.0.4	372	80	55.22043 1.010845	7.29064 0.546867	35.1375 0.00695	1.62062 0.13154	47.9095	2.8209	अस्वीकृत
H.0.5	108	40	55.22043 1.010845	7.29064 0.546867	55.194444 0.729652	7.20910 0.80925	0.0194	2.8503	स्वीकृत

व्याख्या : उपरोक्त आंकड़ों के परीक्षण परिणामों को तालिका में दर्शाया गया है। इसमें स्ववितपोषित संस्थानों के शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि निम्न और कार्यतनाव उच्च होने का संकेत देता है जबकि वित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि स्तर उच्च तथा कार्यतनाव का स्तर निम्न होने का संकेत करता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि वित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत के प्रशिक्षकों के कार्ययसंतुष्टि अधिक और कार्यतनाव कम पाया जाता है इसके तुलना में स्ववितपोसित संस्थानों में कार्यरत प्रशिक्षकों के कार्यसंतुष्टि और कार्यतनाव अधिक होती है। यह अंतर प्रशिक्षण की गुणवत्ता, प्रेरणा स्तर,या अन्य बाहरी कारकों जैसे संसाधनों की उपलब्धता के कारण हो सकता है। इस विश्लेषण के आधार पर, नीति निर्माताओं या प्रशिक्षण संस्थानों के आयोजकों को स्ववित्पोषित और वित्तपोषित शिक्षकों के लिए अलग-अलग रणनीतियों पर विचार करना चाहिए ताकि प्रदर्शन में इस अंतर को कम किया जाए।

निष्कर्ष एवं सुझाव : प्रस्तुत शोध पत्र में "मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यसंतुष्टि एवं कार्यतनाव के मध्य एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध अध्ययन किया गया है । जिसके परिणामों को निम्नानुसार स्पष्ट किया गया है। यदि मगध क्षेत्र में स्थित स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि कम पाई गई, तो इसके कारणों है, नौकरी की असुरक्षा, बेहतर वेतन के अभाव, पेंशन का लाभ प्राप्त नहीं होना आदि। यदि मगध क्षेत्र में स्थित वित्तपोषित संस्थानों के शिक्षकों में तनाव कम पाया गया, तो इसके संभावित कारणों समुचितप्रबंधन का होना,, नौकरी की सुरक्षा, अतिरिक्त कार्यभार नहीं होना आदि । किसी भी शोध पुस्तक या लेख में निष्कर्ष एवं सुझाव उस लेख का अंतिम और महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। जिसमें 'निष्कर्ष' अध्ययन के तथ्यात्मक परिणाम होते हैं जैसे - "क्या मिला" का जवाब है। यह विशुद्ध रूप से तथ्यात्मक और वस्तुनिष्ठ होता है। जबकि 'सुझाव' उन परिणामों के आधार पर दी गई भविष्य की कार्यवाही की संभावित योजनाओं की रूपरेखा होती है। यहां निष्कर्ष के आधार पर आने वाले समय में इसी प्रकार के संभावित शोध अध्ययन, क्रिया, व्यवहार आदि इस क्षेत्र में किए जाने की संभावना तथा आवश्यकता है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध पत्र में शोध के मुख्य निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है । जैसे: अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित प्रारूप वाले प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर अलग अलग गहरा प्रभाव डालता है। वित्तपोषित संस्थानों में सेवारत शिक्षकों की नौकरी की सुरक्षा और स्थिरता प्रदान नहीं करते हैं,जिसके कारण कार्यसंतुष्टि भावना कम और कार्यतनाव की भावना अधिक होती है। जबकि वित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के अंदर कार्यसंतुष्टि की अपेक्षाकृत अधिक और कार्यतनाव कम मौजूद मौजूद रहता हैं।

सुझाव : प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर नीति निर्माताओं, संस्थानों के प्रबंधन एवं भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए संभावित कार्ययोजनाओं रुपरेखा तैयार करने तथा उनका क्रियान्वयन करने हेतु उस पर विचार एवं पहल करने की सुझाव दिया जा सकता है जो निम्नलिखित हैं।

- स्ववित्तपोषित संस्थानों के शिक्षकों के लिए न्यूनतम वेतन एवं कार्यभार के दिशाओं के मानकों, नियामकों पर अध्ययन करना।
- कार्यसंतुष्टि तथा कार्यतनाव प्रबंधन एवं प्रशिक्षण के लिए कार्यशालाओं का आयोजन पर अध्ययन किया जाना।
- राष्ट्रीय स्तर और अ राज्यों में प्रशिक्षकों की दशा और दिशा पर अध्ययन करना।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ. राम शंकर पाठक (2018) आधुनिक शिक्षण विज्ञान एवं प्रशिक्षण अग्रवाल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
2. रॉबिंस, एस. पी., & जे.जे.टी.ए. (2015). Organizational Behavior (16वाँ संस्करण). Pearson Education.
3. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद. (2009). राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.टी.ई. प्रकाशन.
4. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (2014). राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.टी.ई. प्रकाशन.
5. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद. (2014) NCTE विनियम (मान्यता मानदंड और प्रक्रिया) संशोधन,भारत सरकार, राजपत्र.
6. कृष्णास्वामी, ओ. आर. & रंगनाथन, एम., (2018). Methodology of Research in Social Sciences, Himalaya Publishing House.
7. कैरिंगटन, जॉन डब्ल्यू. (2014). Research Methodology: A Step-by-Step Guide for